जननी

नमन शतश: तुम्हें तुम हो,सृजन का आधार ।

एक तुमसे प्रवर्तित यह सृष्टि का व्यापार । 1 ।

मात्र दो करते रजस को विशोधित कर सत्व ।

एक जननी दूसरे जो जानते हैं तत्व । 2 ।

सगुण सुन्दर पूर्ण मृदु जीवन्त लघु प्रतिरूप ।

कौन तुमसे भिन्न कर सकता समोद प्रसूत । 3 ।

तुम अमलतर भावना तुम प्रेम पुंजीभूत ।

वेदना आह्लाद युगपत तुम्हीं में अनुस्यूत । 4 ।

मात्र भौतिक नाल होती जन्म लेकर छिन्न ।

गात्र से उद्भूत हो सकता कथंविधि भिन्न । 5 ।

मात्र तुम करतीं यहां पर सूक्ष्म को सुविराट ।

मार्ग देतीं प्रकट हो जग बीच वह विभ्राट । 6 ।

स्वयं जग के नाथ शिशु बन मनाते हैं मोद।

सर्व सुख दायिनि अखिल ब्रह्माण्ड में तव गोद । 7 ।

तुम प्रथम गुरु सीखती नरता सकल व्यवहार ।

और भाषा धारती तव शब्द से आकार । 8 ।

बरस जाती हो घटा वत जहां दिखता ताप ।

जानती करुणा न तव सीमा न ही परिमाप । 9 ।

सकल जीवन बाल का बनता निपट अभिशाप ।

एक जाते तुम्हारे, प्रचलित नियति अपलाप । 10 ।

एक तुममें समाश्रय पाता अमल वात्सल्य ।

तुम्हीं से उद्भूत धृति करुणा दया सारल्य । 11 ।

छिपे आंचल बीच मृदिमा, तितिक्षा, तप, त्याग ।

फलान्वित होता तुम्हारे रूप में अनुराग । 12 ।

तुम्हारे कारण प्रजा यह निखिल सत्तावान।

तुम धरा पर सत्य ही विधि का विशद वरदान । 13 ।

१४ मई २०२३ शिव कुमार मिश्र